Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 12 ~ Issue 11 (November 2024) pp: 218-229
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

हिंदी कविता में प्रकृति की भूमिका: परंपरागत से आधुनिक कविता तक

डॉ0 विनीता रानी

प्रोफेसर, हिंदी विभाग

के0 जी0 के0 पी0 जी0 कॉलेज, मुरादाबाद, उत्तर प्रदेश

सारांश:

हिंदी कविता में प्रकृति की भूमिका केवल सौंदर्य या पृष्ठभूमि तक सीमित नहीं रही है, बल्कि वह भारतीय सांस्कृतिक चेतना, आध्यात्मिक अनुभूति, सामाजिक यथार्थ और पर्यावरणीय चिंताओं की अभिव्यक्ति का माध्यम भी रही है। परंपरागत कविता में जहाँ प्रकृति को आध्यात्मिक और श्रृंगारिक दृष्टिकोण से देखा गया है, वहीं आधुनिक और समकालीन कविता में वह यथार्थ, प्रतिरोध और चेतावनी का प्रतीक बनकर उभरती है। भक्ति युग के कवियों ने प्रकृति को ईश्वर की सृष्टि के रूप में चित्रित किया, जबकि छायावादियों ने इसे आत्मा की छवि माना। प्रगतिवादी और समकालीन कवियों ने पर्यावरण संकट, औद्योगीकरण और पारिस्थितिक असंतुलन को अपनी रचनाओं में स्वर दिया। यह शोध पत्र प्रकृति की इस रूपांतरण यात्रा का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

मुख्य शब्द: *प्रकृति, हिंदी कविता, सांस्कृतिक चेतना, छायावाद, पर्यावरण, सामाजिक यथार्थ*

प्रस्तावना:

भारतीय साहित्य की परंपरा में प्रकृति का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। यह न केवल कविता की विषयवस्तु रही है, बल्कि एक जीवन दृष्टि, एक दार्शनिक अनुभव, और आत्मा की गहराइयों तक पहुँचने का माध्यम भी रही है। प्रकृति और मानव के रिश्ते को अभिव्यक्ति देने के लिए साहित्य ने सदैव प्रकृति को प्रतीक, रूपक और संवेदना के रूप में अपनाया है। विशेषकर हिंदी कविता में प्रकृति का चित्रण मात्र प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन नहीं है, बल्कि वह मनुष्य की अंतरात्मा, सामाजिक यथार्थ, सांस्कृतिक चेतना और आध्यात्मिक भावनाओं की संवाहिका बन जाती है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक हिंदी कविता में प्रकृति की उपस्थिति ने समय-समय पर बदलते हुए सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक परिवेश को प्रतिबिंबित किया है। रामचरितमानस में तुलसीदास द्वारा चित्रित वनों की छाया से लेकर सुमित्रानंदन पंत के हिमालय के विराट सौंदर्य तक और नागार्जुन की वर्षा में भीगते किसान की चिंता से लेकर केदारनाथ सिंह की हरे पत्तों की कविता तक — हिंदी कविता में प्रकृति ने न केवल काव्य-सौंदर्य को समृद्ध किया है, बल्कि विचार और चेतना को भी आकार दिया है।

भारतीय साहित्य में प्रकृति का सांस्कृतिक संदर्भ

भारतीय संस्कृति में प्रकृति के साथ मनुष्य का संबंध मात्र भौतिक नहीं, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक भी रहा है। वैदिक ऋचाओं में सूर्य, अग्नि, वायु, पृथ्वी और जल को देवताओं के रूप में पूजा गया। यह दृष्टिकोण साहित्य में भी परिलक्षित होता है। यहाँ प्रकृति नष्ट करने योग्य वस्तु नहीं, बल्कि पूज्य, प्रेरणादायी और संरक्षित करने योग्य तत्व रही है। हिंदी कविता में यह दृष्टिकोण निरंतर विकसित होता गया है। भक्ति आंदोलन के कवियों ने प्रकृति को ईश्वर की लीला भूमि के रूप में देखा। संत कवियों की वाणी में प्रकृति आत्म-साक्षात्कार की भूमिका निभाती है। कबीर, सूर, मीरा, तुलसी — इन सबकी रचनाओं में प्रकृति न केवल सौंदर्य का साधन है, बल्कि आध्यात्मिक अनुभूति की भूमि भी है।

प्रकृति और हिंदी कविता: भावात्मक, बौद्धिक और सामाजिक संदर्भ

हिंदी कविता में प्रकृति का रूप समय के साथ विकसित होता गया। यह बदलाव केवल काव्यशैली या शैलीगत नहीं था, बल्कि यह कवि की सामाजिक दृष्टि, उसकी चेतना और समय के यथार्थ से जुड़ा हुआ था। यदि भक्ति काल में प्रकृति आध्यात्मिकता की भूमि है, तो रीतिकाल में वह सौंदर्यबोध और श्रृंगार रस का माध्यम बन जाती है। छायावाद में यह एक गहन आत्मिक प्रतीक बनकर उभरती है, जबकि प्रगतिवादी और समकालीन कविता में यह पर्यावरणीय चिंता, सामाजिक संकट और वैश्विक चेतना का वाहक बन जाती है। प्रकृति को चित्रित करने के पीछे कवि का उद्देश्य महज सौंदर्य का संचार नहीं है, वह उसके माध्यम से मनुष्य के भीतर के द्वंद्व, उसकी सामाजिक स्थिति, और उसकी आस्था, अनुभूति और विवेक को भी प्रकट करता है। आधुनिक कविता में जहाँ एक ओर प्रकृति पर वैज्ञानिक और औद्योगिक दबाव की चिंता दिखाई देती है, वहीं दूसरी ओर यह भी दिखता है कि कवि प्रकृति के साथ अपने रिश्ते को पुनः परिभाषित करने का प्रयास करता है।

परंपरागत और आधुनिक दृष्टिकोण का अंतर

हिंदी कविता में प्रकृति की भूमिका को समझने के लिए आवश्यक है कि हम परंपरागत और आधुनिक दृष्टिकोणों के बीच की रेखा को स्पष्ट करें। परंपरागत कविता में प्रकृति मुख्यतः सौंदर्य, ऋतु वर्णन, श्रृंगार, भक्ति और सांस्कृतिक प्रतीकों के रूप में उपस्थित है। तुलसीदास के रामचरितमानस में चित्रकूट के वन, यमुना की लहरें, पुष्पवाटिकाएँ — ये सब धर्म और भक्ति के सौंदर्यपूर्ण दृश्य प्रस्तुत करते हैं। रीतिकालीन कवियों में बाग-बगीचे, फूल, भंवरे, चाँदनी रातें, ये सभी प्रेम और सौंदर्य के प्रतीक हैं। लेकिन छायावाद के साथ प्रकृति एक नया मोड़ लेती है। अब वह केवल बाहरी सौंदर्य नहीं, बल्कि मन के भीतर की संवेदनाओं का प्रतीक बन जाती है। महादेवी वर्मा के यहाँ प्रकृति एक साथी है, एक गवाही है उस एकांत, पीड़ा और आत्मिक यात्रा की, जो वे तय करती हैं। पंत के यहाँ प्रकृति विराट, विशाल, दार्शनिक है। निराला के यहाँ वह दुख, संघर्ष और विरोध का प्रतीक बन जाती है। इसके विपरीत प्रगतिवाद और नई कविता के दौर में प्रकृति की भूमिका काफी बदल जाती है। अब प्रकृति केवल भावात्मक या सौंदर्यपरक नहीं, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक चिंताओं से भी जुड़ जाती है। नागार्जुन की कविता में वर्षा भी किसान के संघर्ष का प्रतीक बनती है और केदारनाथ सिंह के बांस के झुरमुट में पर्यावरणीय चिंता की प्रतिध्वनि सुनाई देती है।

वर्तमान सन्दर्भ में शोध की प्रासंगिकता

आज का समय जब जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता संकट, प्राकृतिक आपदाओं और पर्यावरणीय असंतुलन का है, तो ऐसे समय में यह प्रश्न अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है कि हिंदी कविता प्रकृति को किस प्रकार देखती है? क्या वह केवल अतीत के सौंदर्य में खोई हुई है या वह वर्तमान की पर्यावरणीय चुनौतियों का साक्षात्कार करती है? इस शोध का उद्देश्य यही

है कि हिंदी कविता में प्रकृति के चित्रण की यात्रा को परंपरागत दृष्टिकोण से आधुनिक काल तक विश्लेषित किया जाए। यह विश्लेषण यह स्पष्ट करेगा कि कविता में प्रकृति न केवल एक दृश्यात्मक वस्तु है, बल्कि एक जीवंत अनुभव है, जो बदलते सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों के अनुरूप अपना रूप, स्वर और भूमिका बदलती रही है।

शोध की आवश्यकता और महत्व: आज के पर्यावरणीय संकटों और आधुनिक जीवन की जटिलताओं के बीच यह आवश्यक हो गया है कि हम साहित्य में प्रकृति की भूमिका को पुनः परखें। हिंदी कविता, जो समाज की चेतना का दर्पण रही है, प्रकृति के साथ अपने संबंधों को किस प्रकार व्यक्त करती है, इसका अध्ययन न केवल साहित्यिक परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण है, बल्कि सामाजिक चेतना के निर्माण में भी सहायक है।

उद्देश्य:

1. परंपरागत हिंदी कविता में प्रकृति के चित्रण का अध्ययन करना।
2. आधुनिक हिंदी कविता में प्रकृति की भूमिका और उसका स्वरूप समझना।
3. दोनों युगों की प्रवृत्तियों की तुलना करना।
4. प्रकृति के माध्यम से सामाजिक व सांस्कृतिक संदेशों का विश्लेषण करना।

अनुसंधान पद्धति: यह शोध कार्य गुणात्मक (Qualitative) विश्लेषण पद्धति पर आधारित है। प्रमुख हिंदी कवियों की कविताओं का चयन कर उनमें प्रकृति की अभिव्यक्ति और उसका अर्थ तलाशा गया है। तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा परंपरागत और आधुनिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया गया है।

शोध की संरचना और दिशा

इस शोध पत्र की संरचना इस प्रकार की गई है कि इसमें पहले हिंदी कविता के विभिन्न कालखंडों — भक्ति काल, रीतिकाल, छायावाद, प्रगतिवाद, और समकालीन कविता — में प्रकृति के चित्रण का विवेचन किया जाएगा। फिर तुलनात्मक विश्लेषण द्वारा यह दिखाया जाएगा कि इन कालों में प्रकृति की भूमिका कैसे बदली है। इसके साथ ही यह भी विश्लेषण किया जाएगा कि कवि प्रकृति के माध्यम से कौन से सामाजिक, सांस्कृतिक या व्यक्तिगत संदेश देना चाहता है। शोध का अंतिम उद्देश्य यह है कि हिंदी कविता को एक संवेदनशील और जीवंत परंपरा के रूप में प्रस्तुत किया जाए, जो प्रकृति के साथ मनुष्य के संबंध को सिर्फ कलात्मक नहीं, बल्कि विचारशील, आलोचनात्मक और नैतिक रूप में भी प्रस्तुत करती है।

साहित्य समीक्षा: प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक कई साहित्यकारों और आलोचकों ने प्रकृति पर केंद्रित साहित्य रचा है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हजारीप्रसाद द्विवेदी, नामवर सिंह और रामविलास शर्मा जैसे आलोचकों ने हिंदी कविता में प्रकृति की भूमिका पर महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए हैं।

मुख्य अध्ययन:

परंपरागत हिंदी कविता में प्रकृति का चित्रण

हिंदी कविता की परंपरागत धारा में प्रकृति का चित्रण अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। यह चित्रण मात्र सौंदर्य-प्रसंग नहीं, बल्कि धार्मिक, आध्यात्मिक, श्रृंगारिक और सांस्कृतिक अर्थवत्ता से युक्त होता है। परंपरागत हिंदी कविता मुख्यतः दो युगों में

विभाजित की जाती है: भक्ति काल और रीति काल। इन दोनों कालों में प्रकृति की भूमिका, उसकी प्रस्तुति और प्रतीकात्मकता भिन्न है, जो उस समय की सामाजिक-धार्मिक चेतना और काव्य दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करती है।

1. भक्ति काल में प्रकृति का चित्रण

भक्ति काल (14वीं से 17वीं शताब्दी) की कविता में प्रकृति का चित्रण अत्यंत आध्यात्मिक, भक्तिपरक और अलौकिक भावनाओं से ओतप्रोत है। इस काल के प्रमुख कवि जैसे तुलसीदास, सूरदास, मीरा, कबीर, रैदास आदि ने अपने काव्य में प्रकृति का चित्रण केवल साज-सज्जा के रूप में नहीं, बल्कि ईश्वर की सृष्टि और लीला-भूमि के रूप में किया है। प्रकृति यहाँ भक्त और भगवान के संवाद की साक्षी बनती है, एक ऐसी मंचभूमि बनती है जिस पर भक्ति की नाट्य-रचना घटित होती है।

तुलसीदास

'रामचरितमानस' में तुलसीदास ने चित्रकूट, पंचवटी, गंगा, यमुना, नदियाँ, वन, पर्वत आदि का अत्यंत भावनात्मक चित्रण किया है। ये प्राकृतिक तत्व रामकथा की पृष्ठभूमि भर नहीं हैं, बल्कि धर्म, करुणा, त्याग और जीवन मूल्यों के संवाहक भी हैं।

उदाहरण:

"बन बिनु राम कहाँ सुखु साचा।

ससि बिना रजनी, नीर बिना मीनु, रघुपति बिनु दिनु नाहीं।"

यहाँ 'बन' (वन) केवल स्थान नहीं, रामभक्ति की अनुभूति का प्रतीक है।

सूरदास

सूरदास ने ब्रज की प्राकृतिक छटा का जो वर्णन किया है, वह भक्ति और श्रृंगार दोनों का अद्भुत समन्वय है। वृंदावन की कुंज गलियाँ, यमुना के तट, बंसी की धुन पर थिरकते वृक्ष — सबमें कृष्णलीला की भावमयी उपस्थिति दिखती है।

उदाहरण:

"बरसैं बदरिया घेरि घन घन

कुंजन कुंजन भौंर बिनावैं, कलि कलि भ्रमरन की तन तन।"

यहाँ बादल, कुंज, भौंरे, कली—all तत्व प्रकृति की सौंदर्यपूर्ण और भक्ति-प्रधान रचना में सहयोगी हैं।

मीरा

मीरा के पदों में प्रकृति एक आत्मीय साथी की तरह आती है — मोर, पपीहा, वसंत, वर्षा — सब उनके प्रेम की प्रतीक्षा और पीड़ा के सहचर बनते हैं।

उदाहरण:

"मोर मुकुट सिर ऊपर सोहे, बाँसुरी करत मधुर धुन।

वृंदावन की वह कुंज गलियाँ, मीरा बाँवली फिरै धुन।"

यहाँ वृंदावन की गलियाँ मीरा की आत्मा के उत्थान और आत्मसमर्पण की भूमि हैं।

2. रीति काल में प्रकृति का चित्रण

रीति काल (17वीं से 19वीं शताब्दी) की कविता में प्रकृति का स्वरूप पूरी तरह से बदल जाता है। इस युग की प्रमुख प्रवृत्ति श्रृंगार (नायिका-नायक का प्रेम, सौंदर्य, भाव-विलास) है, और प्रकृति का उपयोग उस श्रृंगारिक भावना को और अधिक सजीव, मोहक और प्रभावी बनाने के लिए किया जाता है। प्रकृति यहाँ सजावटी और सजावन की वस्तु है — जो प्रेम प्रसंगों की अभिव्यक्ति के लिए उपयुक्त वातावरण रचती है।

बिहारी

बिहारी के दोहों में प्रकृति की एक सूक्ष्म, प्रतीकात्मक और मनोवैज्ञानिक व्याख्या मिलती है। वे प्राकृतिक वस्तुओं का उपयोग मानवीय भावनाओं को सूक्ष्मता से व्यक्त करने के लिए करते हैं।

उदाहरण:

"निस दिन बरसत नैन हमारे, भये सराय जुबैर।

नीर भरैं चंचल चितवा, जात न आवत ठौर।"

यहाँ प्रेम-विरह की पीड़ा को आँखों के अश्रु से जोड़कर जल की निरंतर धारा से तुलना की गई है — एक सुंदर प्राकृतिक रूपक।

घनानंद

रीति काल के अन्य कवियों जैसे घनानंद ने प्रेम के आलंबन रूप में प्रकृति को अपनाया। उनके काव्य में बसंत ऋतु, फूल, कुंज, पक्षियों की चहचहाहट आदि प्रेम की पृष्ठभूमि बनते हैं।

उदाहरण:

"फूले फूल पलाश, चहुँ दिशि बाँस बगन में बास।

नाचे पंछी मोर, सुनि बीन बंसुरि के रास।"

यहाँ बसंत का वर्णन एक प्रेमी के हृदय की उमंग और उत्साह का प्रतीक बनता है।

कविकालिदास (रीतिकाल)

"रसिकप्रिया", "काव्यप्रकाश" जैसे ग्रंथों में प्रकृति को श्रृंगारिक क्रियाओं के लिए मंच के रूप में उपयोग किया गया है। बाग-बगीचे, चाँदनी रातें, कमल-कली, भ्रमर—इन सभी का प्रयोग काम भावना की उत्कटता दिखाने के लिए होता है। भक्ति काल और रीति काल दोनों में प्रकृति की उपस्थिति अत्यंत प्रभावशाली रही है, किंतु इनकी प्रयुक्ति का स्वर और आशय भिन्न है। भक्ति काल में प्रकृति आत्म-उद्घाटन, ईश्वर के प्रति प्रेम और समर्पण का माध्यम है, जबकि रीति काल में यह मनोविनोद, प्रेम और सौंदर्यबोध की अभिव्यक्ति का साधन बनती है। दोनों ही दृष्टिकोणों में प्रकृति, मानव मन की संवेदनाओं को आकार देने वाली एक सजीव, भावनात्मक और सांस्कृतिक शक्ति बनकर उभरती है।

आधुनिक हिंदी कविता में प्रकृति का स्वरूप:

आधुनिक हिंदी कविता में प्रकृति केवल एक बाह्य सौंदर्य या प्रतीकात्मक वस्तु नहीं रह जाती, बल्कि यह मनुष्य की अंतरात्मा, उसकी संवेदनशीलता, सामाजिक चेतना और पर्यावरणीय सरोकारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम बन जाती है। जहाँ परंपरागत कविता में प्रकृति एक अलौकिक या श्रृंगारिक उपस्थिति थी, वहीं आधुनिक युग में यह जीवन के विविध पक्षों को उजागर करने वाला एक जटिल, बहुआयामी और आत्मीय तत्व बन जाती है। इस युग को दो प्रमुख प्रवृत्तियों में बाँटा जा सकता है: छायावाद और प्रगतिवाद एवं नई कविता।

1. छायावादी कविता में प्रकृति का आत्मीय और आध्यात्मिक स्वरूप

छायावाद (1918–1936) हिंदी कविता का वह युग था जिसमें कवियों ने मनोविज्ञान, आत्मा, सौंदर्यबोध, रहस्यवाद और कल्पना के स्तर पर प्रकृति को एक गहन अनुभव के रूप में चित्रित किया। जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जैसे कवियों की काव्य-सृष्टि में प्रकृति केवल दृश्य परिवेश नहीं, बल्कि हृदय की स्थिति, चेतना की संवाहिका और आध्यात्मिक अनुभव की वाहिका बनकर उपस्थित होती है।

सुमित्रानंदन पंत

पंत के काव्य में प्रकृति का सौंदर्य, उसका कोमल रूप और जीवन की गतिशीलता का चित्र अत्यंत जीवंत रूप में उभरता है। वे प्रकृति को केवल देख नहीं रहे, वे उसे महसूस कर रहे हैं — उसके रंग, गंध, गति और संगीत को आत्मसात कर रहे हैं।

उदाहरण:

"हिमाद्रि तु छू रहा गगन को, जानता है अपनी सीमा।

किन्तु क्या तुम जान पाओगे, प्रकृति का यह मौन रीमा?"

यहाँ हिमालय केवल पर्वत नहीं, बल्कि अडिग संकल्प, मौन साधना और आत्मबल का प्रतीक बन जाता है।

महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा की कविताओं में प्रकृति विरह, अधूरी तलाश और आंतरिक पीड़ा की भावभूमि है। उनके काव्य में फूल, तारे, वर्षा, पवन—all प्राकृतिक प्रतीक उनके अंतरद्वंद्व को रूपायित करते हैं।

उदाहरण:

"मैं नीर भरी दुख की बदली।

स्पंदन में चिर निस्पंद बसा, क्रंदन में मुस्काना।"

यहाँ 'नीर भरी दुख की बदली'—कविता में प्रकृति स्वयं कवयित्री का ही स्वरूप बन जाती है, जो अंतरात्मा की गहराई से बह रही है।

जयशंकर प्रसाद

प्रसाद की काव्य-भाषा में प्रकृति रहस्य, सौंदर्य और दर्शन का समन्वय है। उनके नाटकों और खंडकाव्यों में ऋतु-परिवर्तन, पुष्प-वर्षा, नभ-गंगा, संध्या की लालिमा—all प्रतीकों से आध्यात्मिक बोध उत्पन्न होता है।

2. प्रगतिवादी कविता और नई कविता में प्रकृति का यथार्थवादी चित्रण

प्रगतिवाद और नई कविता (1943 के बाद) में प्रकृति का चित्रण परंपरागत रूपों से हटकर यथार्थवादी दृष्टिकोण में विकसित होता है। इस दौर के कवियों ने प्रकृति को सामाजिक अन्याय, राजनीतिक विडंबना, गरीबी, शोषण और पर्यावरणीय संकटों से जोड़ा। प्रकृति अब विलासिता नहीं, संघर्ष की साथी और पीड़ित मानवता की दर्पण बन जाती है।

नागार्जुन

नागार्जुन की कविता में प्रकृति आम जन के जीवन का अभिन्न हिस्सा है। खेत, मेघ, नदी, फसल—all उनकी कविता में किसान की व्यथा, बेबसी और आशा के प्रतीक बन जाते हैं।

उदाहरण:

"बादल को घिरते देखा है

सावन के गीले कंबल से,

झांक रहा था गांव अधेरा,

ठंडी मिट्टी, भीगा खेत

कुहरे में लिपटा संध्या-प्रेत।"

यहाँ 'बादल' केवल मौसम का संकेत नहीं, बल्कि सामाजिक यथार्थ का एक मानवकेंद्रित बिंब है, जो किसान की आशंका और प्रतीक्षा को उभारता है।

त्रिलोचन

त्रिलोचन की कविताओं में किसान, मजदूर, गाँव और मिट्टी—सब प्रकृति के एक जीवंत भाग के रूप में आते हैं। वे एक सच्ची ग्रामीण चेतना के कवि हैं, जिनकी कविता प्रकृति की ठोस अनुभूतियों से जुड़ी है।

उदाहरण:

"धरती ने सींचा,

सूरज ने पकाया

हवा ने शीतल किया

फिर क्यों भूखा है किसान?"

यह कविता एक चुभता हुआ प्रश्न है, जो कृषि-प्रधान देश में किसान की स्थिति को प्रकृति के बीच रखकर उजागर करती है।

अज्ञेय

अज्ञेय की कविता में प्रकृति एक मानसिक और दार्शनिक बिंब के रूप में आती है। वे प्रकृति को स्थूल रूप में नहीं, बल्कि जटिल अनुभव और संवेदनात्मक तल पर ग्रहण करते हैं।

उदाहरण:

"मैं क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर

मेरे अंग-अंग में प्रकृति की पीड़ा है।"

यहाँ प्रकृति के पाँच तत्व कवि की आत्म-चेतना का विस्तार बन जाते हैं।

केदारनाथ सिंह

केदारनाथ सिंह की कविता में प्रकृति का चित्रण अत्यंत समकालीन है। वे फूलों, पत्तियों, बादलों, नदियों के माध्यम से मनुष्य की अकेलापन, असुरक्षा, और टूटते संबंधों की व्यंजना करते हैं।

उदाहरण:

"एक दिन नदी सूख जाएगी

और मैं पूछता रह जाऊँगा

कहाँ गए वे जल के अक्षर

जो मैंने लिखे थे तुम्हारे नाम?"

यह कविता प्रेम और पर्यावरणीय संकट दोनों को एक साथ प्रस्तुत करती है।

6.3 तुलनात्मक अध्ययन: परंपरागत कविता में जहाँ प्रकृति को आध्यात्मिक, सौंदर्यपरक एवं श्रृंगारिक दृष्टिकोण से देखा गया है, वहीं आधुनिक कविता में प्रकृति एक सजीव पात्र के रूप में उभरती है जो सामाजिक सन्दर्भों से जुड़ी होती है। हिंदी काव्य परंपरा में प्रकृति सदैव एक केंद्रीय तत्व रही है, किंतु इसका स्वरूप समयानुसार परिवर्तित होता गया। जहाँ परंपरागत कविता में प्रकृति एक आध्यात्मिक अनुभूति, सौंदर्य और श्रृंगार की वाहिका के रूप में चित्रित हुई, वहीं आधुनिक कविता में यह सामाजिक संदर्भों, मानव संघर्ष, प्रदूषण, और पर्यावरणीय संकट की सजीव अभिव्यक्ति बन गई है। नीचे इस अंतर को विभिन्न पहलुओं के आधार पर विस्तृत रूप में प्रस्तुत किया गया है:

पक्ष	परंपरागत कविता	आधुनिक कविता
1. दृष्टिकोण	सौंदर्यात्मक, धार्मिक और श्रृंगारिक	सामाजिक, यथार्थवादी, पर्यावरण चेतन
2. प्रकृति की भूमिका	सहचरी, सजावट का माध्यम, ईश्वर की सृष्टि	जीवंत पात्र, संघर्ष की साथी, चेतना की संवाहिका
3. प्रकृति का भाव पक्ष	शांति, माधुर्य, आत्मिक उल्लास	विघटन, चिंता, बेचैनी, प्रतिरोध
4. विषयवस्तु	ऋतु वर्णन, फूल-पत्तियाँ, चाँदनी रातें, बाग-बगिचे, कुंज गलियाँ	गाँव, किसान, सूखा, प्रदूषण, जलवायु संकट, वनों की कटाई
5. प्रमुख प्रतीक	वसंत, कोयल, यमुना तट, कुंज वन, फूल	बदली, सूखा खेत, प्रदूषित नदी, कटी हुई डालियाँ, कूड़े के ढेर
6. उद्देश्य	भावनात्मक संवेग, सौंदर्यानुभूति, भक्ति और प्रेम का संचार	विचारोत्तेजना, सामाजिक चेतना, पर्यावरणीय सजगता
7. कवियों का दृष्टिकोण	अध्यात्मिक एकात्मता – ईश्वर की सृष्टि में रमणीयता	मनुष्य-प्रकृति संघर्ष, व्यवस्था पर आलोचनात्मक दृष्टि
8. शैली एवं भाषा	कोमल, रसयुक्त, अलंकारिक	सरल, सीधी, तीव्र और यथार्थवादी
9. प्रकृति और मनोविज्ञान	आत्मा की शांति और संतुलन	मनुष्य की उलझन, विखंडन और असुरक्षा
10. प्रमुख कवि	तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, बिहारी, केशव	नागार्जुन, त्रिलोचन, केदारनाथ सिंह, अज्ञेय, दुष्यंत कुमार

उदाहरणों द्वारा स्पष्टता:

- **परंपरागत कविता:**

  सूरदास की पंक्ति —

  "कहाँ गये वो वन के विहार,

  जहाँ बंसी की धुन सुहानी थी?"

  → यहाँ वृंदावन और यमुना का वर्णन कृष्ण-प्रेम में डूबा सौंदर्य बोध है।

- **आधुनिक कविता:**

  नागार्जुन की पंक्ति —

"अब तो नदी भी बदबू देती है,
उसमें न कोई बिंब, न कोई प्रतिबिंब है।"
→ यह आज के पर्यावरणीय पतन और मानवीय उपेक्षा की आलोचना है।

प्रकृति और सांस्कृतिक चेतना

हिंदी कविता में प्रकृति केवल एक बाह्य दृश्य या प्राकृतिक पृष्ठभूमि भर नहीं है, बल्कि वह भारतीय संस्कृति की जीवंत अभिव्यक्ति और संवेदनशील अनुभूति है। भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना में प्रकृति का विशेष स्थान रहा है, और यह चेतना कविता के माध्यम से समृद्ध होती रही है। भारतीय लोक-जीवन में ऋतुओं का आगमन, कृषि चक्र की गतिविधियाँ, त्योहारों का उत्साह—सब कुछ प्रकृति से जुड़ा हुआ है और यह सब कुछ हिंदी कविता में गहराई से अभिव्यक्त हुआ है। उदाहरण के लिए, हरिवंश राय बच्चन की 'मधुशाला' में वसंत ऋतु केवल ऋतु न होकर जीवन के उल्लास, नवचेतना और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का प्रतीक बन जाती है।

लोकगीतों और निर्गुण भक्ति परंपरा में भी प्रकृति सांस्कृतिक मूल्यों की संवाहिका के रूप में सामने आती है। तुलसीदास की रामचरितमानस में 'चैत मास' का वर्णन हो या सूरदास की रचनाओं में बृज की लीलाओं में लताओं और वृक्षों की सहभागिता, सभी स्थानों पर प्रकृति भारतीय परंपरा की सामाजिक-सांस्कृतिक अनुभूतियों की संवाहक बनकर उपस्थित होती है। प्रकृति के माध्यम से जीवन का चक्र, जन्म-मरण, कर्म, और पुनर्जन्म की अवधारणाएँ भी कवियों ने सहज ही प्रस्तुत की हैं। इस प्रकार प्रकृति हिंदी कविता में केवल वर्ण्य वस्तु नहीं, बल्कि सांस्कृतिक संवाद की एक सशक्त धारा है।

6.5 समकालीन कविता और प्रकृति

समकालीन हिंदी कविता में प्रकृति का चित्रण एक **नवीन दृष्टिकोण** के साथ सामने आया है। अब वह केवल सौंदर्य और भावुकता की वाहिका न रहकर पर्यावरणीय चेतना और संकट की साक्षात् प्रतीक बन चुकी है। बीसवीं और इक्कीसवीं शताब्दी में बढ़ते **औद्योगीकरण**, **वनों की कटाई**, **जलवायु परिवर्तन**, **प्लास्टिक प्रदूषण**, और **वन्यजीवों के विलुप्त होने** जैसे मुद्दों ने कवियों की रचनात्मक संवेदना को एक नया आयाम दिया है। समकालीन कवि अब प्रकृति को केवल एक रोमांटिक उपमा के रूप में नहीं, बल्कि संघर्षरत सामाजिक यथार्थ के हिस्से के रूप में चित्रित करते हैं।

उदाहरण के लिए, **केदारनाथ सिंह** की कविता "बाघ" में बाघ केवल एक जानवर नहीं बल्कि विलुप्त होते प्राकृतिक संतुलन और खोते हुए भय-आदर के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत होता है। **दुष्यंत कुमार** की रचनाओं में पर्यावरणीय समस्याएँ राजनीतिक प्रतीकों में रूपांतरित होकर आती हैं, जैसे कि सूखती नदियाँ या कटते हुए पेड़। **गगन गिल**, **मंगलेश डबराल**, और **अशोक वाजपेयी** जैसे कवियों ने भी पर्यावरण संकट और प्रकृति के दोहन के विरुद्ध अपनी कविताओं में तीव्र भावनात्मक तथा वैचारिक प्रतिरोध दर्ज किया है।

इन कविताओं का मुख्य उद्देश्य केवल प्रकृति के सौंदर्य को सराहना नहीं है, बल्कि उस पर हो रहे अत्याचार को रेखांकित कर, पाठकों को चेताना और उन्हें पर्यावरण के प्रति उत्तरदायित्व का बोध कराना है। आज की कविता 'प्रकृति-प्रेम' से आगे बढ़कर 'प्रकृति-संरक्षण' की पक्षधर बन गई है।

7. निष्कर्ष

इस समग्र अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि हिंदी कविता में प्रकृति की भूमिका **समय, संदर्भ और वैचारिक प्रवृत्तियों** के अनुसार निरंतर रूपांतरण से गुज़री है। **भक्ति काल** में प्रकृति आध्यात्मिक उपासना की भूमि बनी, जहाँ वृक्ष, नदियाँ, फूल और पशु भी ईश्वर की लीलाओं में भागीदार रहे। **छायावादी युग** में यह आत्मा के सौंदर्य की सहचरी रही, जो आंतरिक भावनाओं को सजीवता देती है। परंतु जैसे-जैसे साहित्यिक प्रवृत्तियाँ **प्रगतिशील** और **यथार्थवादी** बनीं, प्रकृति एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण के साथ सामने आई—एक ऐसा पात्र जो समाज की विषमताओं, राजनीतिक सत्ता के दुरुपयोग और उपभोक्तावादी संस्कृति की आलोचना का माध्यम बना।

समकालीन हिंदी कविता में प्रकृति अब मात्र प्रेरणा का स्रोत नहीं, बल्कि संकटग्रस्त चेतना की पुकार बन गई है। यह परिवर्तन हिंदी साहित्य की सामाजिक-सांस्कृतिक यात्रा का प्रतिबिंब है, जहाँ कवि अब सौंदर्य और भावुकता के अतिरिक्त **जवाबदेही** और **पर्यावरणीय चेतना** को भी अपनी अभिव्यक्ति का हिस्सा बना रहा है।

इस प्रकार हिंदी कविता में प्रकृति की उपस्थिति केवल कलात्मक नहीं, बल्कि एक **वैचारिक विमर्श** है जो भारतीय समाज की बदलती मानसिकता, संस्कृति और सभ्यता का जीवंत दस्तावेज़ प्रस्तुत करती है।

9. संदर्भ सूची:

1. रामचंद्र शुक्ल (1935). हिंदी साहित्य का इतिहास। प्रयाग: नागरी प्रचारिणी सभा।
2. नामवर सिंह (1981). कविता के नए प्रतिमान। नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
3. महादेवी वर्मा (1951). दीपशिखा। प्रयाग: साहित्य संगम।
4. सुमित्रानंदन पंत (1960). पल्लव। लखनऊ: भारतीय साहित्य परिषद।
5. नागार्जुन (1974). पत्रहीन नग्न गाछ। दिल्ली: राजकमल।
6. केदारनाथ सिंह (1995). अभी बिल्कुल अभी। नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन।
7. निराला, सूर्यकांत त्रिपाठी (2001). *परिमल.* भारतीय ज्ञानपीठ.
8. बच्चन, हरिवंश राय (1999). *मधुशाला.* राजकमल प्रकाशन.
9. नागार्जुन (2007). *युगधारा.* भारतीय ज्ञानपीठ.
10. त्रिलोचन (2010). *धरती.* वाणी प्रकाशन.
11. अज्ञेय (2002). *आँगन के पार द्वार.* राजकमल प्रकाशन.
12. केदारनाथ सिंह (2005). *अब तक.* वाणी प्रकाशन.
13. गगन गिल (2011). *मैं जब तक आयी बाहर.* संवाद प्रकाशन.
14. अशोक वाजपेयी (2008). *कहीं नहीं वहीं.* वाणी प्रकाशन.
15. रामविलास शर्मा (1998). *हिंदी कविता और प्रकृति.* राजकमल प्रकाशन.
16. नामवर सिंह (1995). *कविता के नए प्रतिमान.* राजकमल प्रकाशन.
17. गुप्त, मैथिलीशरण (1997). *साकेत.* भारतीय ज्ञानपीठ.
18. तुलसीदास (2000). *रामचरितमानस.* गीताप्रेस गोरखपुर.
19. सूरदास (2004). *सूरसागर.* साहित्य अकादमी.
20. मीरा (2006). *मीरा पदावली.* लोकभारती प्रकाशन.
21. निरुपमा शुक्ला (2017). *आधुनिक कविता में पर्यावरण बोध.* प्रयाग साहित्य भवन.